प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

राष्ट्रीय सस्य विज्ञान कांग्रेस में वैज्ञानिकों ने की महत्वपूर्ण संस्तुतियां

पंतनगर। २३ फरवरी, २०१८। पंतनगर विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग एवं सस्य विज्ञान समिति द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सस्य विज्ञान कांग्रेस का समापन कल देर सायं हुआ। दिनांक २० से २२ फरवरी २०१८ को 'प्रकृति संरक्षण एवं आर्थिक सशक्तीकरण हेतु सस्य विज्ञान का पुनर्रूपांकन' विषय पर हुयी इस कार्यशाला के समापन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. ए.के. मिश्रा ने की। इस अवसर पर डा. अरविन्द कुमार, कुलपति, रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी, उत्तर प्रदेश, विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय, डा. जे. कुमार भी मंचासीन थे। इस कांग्रेस में ६ तकनीकी सत्र आयोजित किये गये तथा देश भर के संस्थानों से ३६५ वैज्ञानिकों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों एवं किसानों ने इसमें प्रतिभागिता की।

कांग्रेस के विभिन्न तकनीकी सत्रों में वैज्ञानिकों द्वारा की गयी संस्तुतियों को कांग्रेस के आयोजक सचिव, डा. बी.एस. महापात्र, ने प्रस्तुत किया। इन संस्तुतियों में मृदा स्वास्थ्य में वृद्धि हेतु मृदा में उपस्थित लाभदायक सूक्ष्म जीवों को जैव उर्वरक के रूप में प्रयोग करने व उनकी संख्या में वृद्धि करने के उपाय करना; जैविक खेती, कृषि वानिकी, पशुपालन के साथ समन्वित खेती को पारिस्थितिकी दशाओं के अनुरूप परिष्कृत कर बढ़ावा देना; सूखा, अम्लता, उच्चताप इत्यादि अजैविक कारकों के प्रति पौधों में अवरोध उत्पन्न करने हेतु तकनीकों का विकास, जिसमें सूक्ष्म पोषक तत्व, पौध वृद्धि नियामक रसायन, सूक्ष्म जीव व नवीन प्रजनन व जैव तकनीक उपकरणों, इत्यादि का प्रयोग करना; खरपतवारों से उत्पन्न तनाव के कारण होने वाली ३५ से ४० प्रतिशत उत्पादन में कमी को रोकने हेतु पारिस्थितिकी सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए खरपतवार नियंत्रण कार्यक्रमों में व्यापक प्रभाव वाले रसायनों के साथ जैविक व यांत्रिक नियंत्रण के तरीकों का प्रयोग; समस्याग्रस्त मृदा में सुधार के तरीकों के प्रयोग के साथ-साथ कृषि वानिकी, औषधीय व संगधी पौधों व अखाद्य फसलों का उत्पादन; पर्यावरण परिवर्तन व संसाधन की कमी पर अधिक शोध से समस्याओं के हल ढूंढना; जिम्मेदारी से जल का प्रयोग व जल के कम से कम प्रयोग की तकनीकों का प्रयोग को बढ़ावा देना; देश की प्रत्येक कृषि पारिस्थितिकी दशा हेतु संरक्षित खेती के सिद्धांतों का रूपांकन करना; पर्वतीय क्षेत्रों को उनकी विशेषताओं के अनुरूप फसल उत्पादन जैसे फल, बेमौसमी सब्जी, पुष्प, इत्यादि की जैविक खेती हेतु चयनित करना; समन्वित खेती में फसल के साथ डेरी, कम्पोस्ट खाद, मत्स्य पालन, बकरी/भेड़ पालन, सूकर पालन, कृषि वानिकी, इत्यादि का समावेश से छोटे व सीमांत किसानों को भोजन व पोषण की पूर्ति व आर्थिक सुरक्षा प्रदान करना; कृषि शिक्षा को उच्च माध्यमिक शिक्षा में आवश्यक विषय के रूप में समावेश; तथा प्रसार तंत्र को सशक्त कर किसानों को लाभ पहुंचाना सम्मिलित हैं।

समापन सत्र में मंचासीन (बायें से दायें) डा. बी.एस. महापात्र, डा. जे. कुमार, प्रो. ए.के. मिश्रा एवं डा. अरविन्द कुमार।